डॉ. बिपिन पाण्डेय

उत्तर प्रदेश

रोक कब पाया ज़माना चल रही है लेखनी।
पर बुराई को सदा से खल रही है लेखनी।।

कब चला तलवार लेकर सत्य दुनिया में कहो,
सत्य का तो सर्वदा संबल रही है लेखनी।

घाव ये घातक करे शमशीर है कुछ भी नहीं,
पर सभी की दृष्टि में कोमल रही है लेखनी।

हो गए जज़्बात गायब फिक्र करता कौन अब,
नित जरूरत के मुताबिक ढल रही है लेखनी।

ताज छीने तख्त पलटें कह रही तारीख़ ये,
याद करिए कौम की हलचल रही है लेखनी।

नाज़ जिस पर हिंद को था वह अदब तो है नहीं,
काश हो वैसी कि जैसी कल रही है लेखनी।

आफताबी नूर अब तो दूर की कौड़ी हुआ,
जुगनुओं- सी लौ समेटे जल रही है लेखनी।

नन्दिता माजी शर्मा 'नाद'

मुम्बई

रहे याद जो वो फसाना लिखेंगे,
कलम से पुराना ज़माना लिखेंगे।

तुम्हीं से गुलिस्तां सहर शाम मेरे,
मुहब्बत भरा इक तराना लिखेंगे।

जरा सा सहारा मिला जो तुम्हारा,
उसे हम हमारा खज़ाना लिखेंगे।

कहे गर ज़माना बताओ पता अब,
तुम्हारे नयन को ठिकाना लिखेंगे।

लबों पर तबस्सुम रहेगी हमेशा,
हक़ीक़त सनम हम छुपाना लिखेंगे।

पता पूछते हो हमारे गिलों का,
तुम्हारी नजर को निशाना लिखेंगे।

न आए जुदाई कभी जिंदगी में,
दुआ में ख़ुदा को मनाना लिखेंगे।

छुपा है नजर में समंदर ए उल्फत,
मुहब्बत में हम गुनगुनाना लिखेंगे।

तुम्हारी रज़ा में रज़ा है हमारी,
कभी हम न शिकवे सुनाना लिखेंगे।